शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

शिक्षक का सम्मान

अंक-५६ वर्ष-२०२५

माह नवम्बर

शिक्षण संवाद

बाल दिवस विशेषांक

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

वर्ष-२०२५
अंक-५६
माह- नवम्बर २०२५

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक
सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी
जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी
विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मिशन शिक्षण संवाद परिवार द्वारा अपनी मासिक पत्रिका "शिक्षण संवाद" का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को बढ़ावा देने और शिक्षकों की रचनात्मकता को एक साझा मंच प्रदान करने की दिशा में, यह पत्रिका एक मील का पत्थर साबित हो रही है।

''मिशन शिक्षण संवाद'' ने उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों के परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को जिस तरह एक सूत्र में पिरोया है, वह सराहनीय है। आपकी यह मासिक पत्रिका न केवल विभागीय सूचनाओं और शैक्षिक गतिविधियों का संकलन है, बल्कि यह ज़मीनी स्तर पर हो रहे, बेहतरीन बदलावों और 'टीचिंग लर्निंग मटेरियल' (**TLM**) के प्रभावी उपयोग की एक जीवंत मार्गदर्शिका भी है।

आज के डिजिटल युग में, जब शिक्षा का स्वरूप निरंतर बदल रहा है, आपकी पत्रिका शिक्षकों को आधुनिक तकनीकों और छात्र–केंद्रित शिक्षण विधियों से अपडेट रखने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से शिक्षकों के अनुभव और उनके अभिनव प्रयोग प्रदेश के दूर–दराज के क्षेत्रों में बैठे अन्य गुरुजनों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

पत्रिका के संपादन मंडल, लेखकों और इस मुहिम से जुड़े सभी कर्मठ सदस्यों को उनके निस्वार्थ परिश्रम और समर्पण के लिए बहुत–बहुत बधाई।

मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर प्रगति की मंगल कामना करता हूँ। आशा है कि ज्ञान का यह प्रवाह इसी प्रकार अनवरत जारी रहेगा और 'मिशन शिक्षण संवाद' शिक्षा जगत में नित नए आयाम स्थापित करेगा।

ढेरों शुभकामनाओं के साथ।

(अनिल कुमार)
खण्ड शिक्षा अधिकारी
वि०खं० – बड़ौत (बागपत)

सम्पादकीय

यह स्पष्ट है कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम, परीक्षा और परिणाम तक सीमित नहीं है। शिक्षा का अर्थ है– संवेदनशीलता, संवाद, समावेशन और सामाजिक उत्तरदायित्व। लेकिन विगत कुछ वर्षों से शिक्षा केवल आर्थिक समृद्धता की ओर अधिक नज़दीक जाती दिखाई दे रही है। जिसके परिणाम में संवेदनशीलता, संवाद, समावेशन और सामाजिक उत्तरदायित्व लिखने– पढ़ने के लिए अलंकारिक शब्द होते जा रहे हैं। यही कारण है कि बीते कुछ वर्षों में शिक्षा जगत ने अनेक परिवर्तन देखे हैं। डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ी है, शिक्षण विधियाँ बदली हैं और शिक्षक की भूमिका भी केवल ज्ञानदाता से आगे बढ़कर मार्गदर्शक और सहयात्री की हो गई है। परन्तु इन सभी परिवर्तनों के बीच एक प्रश्न बार–बार सामने आता है, क्या हम विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ संस्कार और संस्कृति के वह बीज रोपित कर पा रहे हैं, जिससे भविष्य के ऐसे भावी नागरिक बनकर तैयार हों जिनके अन्दर सहनशीलता, समन्वय, सामन्जस्य, धैर्य, ईमानदारी, कर्तव्य आदि जैसे मानवीय कल्याण के गुणों का स्थाई सृजन हो सके।

मिशन शिक्षण संवाद का सदैव यही प्रयास रहा है परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों लेकिन शिक्षा केवल आर्थिक समृद्ध मात्र के लिए न हो बल्कि मनुष्य को मनुष्य बनाकर मनुष्य और मानवता के लिए भी जीवन जीना सिखाने वाली हो और इसके लिए केवल शाब्दिक प्रयास ही न होकर, वास्तविक जीवन में भी यथार्थपरक हों।

इसके लिए सबसे प्राथमिक कार्य है शिक्षा, संस्कार और संस्कृति के साथ मानवीय कल्याण के जीवन पर संवाद का। क्योंकि एक छोटा सा संवाद भी किसी के जीवन की दिशा बदल सकता है। यह सच्चाई हमें बार–बार अपने दायित्व का बोध कराती है।

शिक्षण संवाद की यह मासिक यात्रा केवल लेखों और विचारों का संकलन नहीं बल्कि शिक्षकों के अनुभवों, प्रश्नों और प्रयासों का साझा संवाद है। नवम्बर–2025 का यह अंक भी इसी भावना के साथ प्रस्तुत है कि हम शिक्षा को केवल पढ़ाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज–निर्माण की आधारशिला के रूप में देखें।

संपादक
मिशन शिक्षण संवाद

Index

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	7
टी.एल.एम.संसार	8
विचार शक्ति	9-12
बात महिला शिक्षकों की	13
सद विचार – जवाहर लाल नेहरू	14-15
प्रेरक–प्रसंग–बिरसा मुंडा	16-20
कविता	20-21
दिवस विशेष– बाल दिवस	22-23
नवाचार–भूगोल वाटिका	24-25
शैक्षिक तकनीकी–Podcast	26-27
गतिविधि–शब्द खोजो पहेलियाँ	28
बच्चें का कोना – मधुर वचन	29
बाल कहानी	30
खेल जगत–चैकर्स	31-32
योग विशेष	33
फ़िल्म समीक्षा–कोई मिल गया	34-35

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद ने, जो दीप जलाया ज्ञान,
शिक्षा जगत में बन गया, वह उज्ज्वल पहचान।
नवाचारों को पंख मिले, रचना को मिला आसमान,
शिक्षकों की प्रतिभा को, मिला साझा सा एक स्थान।
उत्तर प्रदेश से अन्य राज्यों तक, जोड़ा गुरुओं का तार,
एक सूत्र में बंधे सभी, यह प्रयास सराहनीय अपार।
सूचनाओं से आगे बढ़कर, अनुभवों की यह थाती,
ज़मीनी बदलावों की गाथा, हर पन्ने में मुस्काती।
टीएलएम के सशक्त प्रयोग, सीखने का नव आधार,
मार्गदर्शक बनकर दिखाए, शिक्षा का उजला संसार।
डिजिटल युग की इस धारा में, बदल रहा हर आयाम,
आधुनिक तकनीक, छात्र–केंद्रित, सिखाने का नया पैगाम।
दूर–दराज के गाँवों तक, प्रेरणा का यह प्रवाह,
गुरु–शिष्य के जीवन में, भर दे विश्वास और चाह।
टेक्निकल टीम हो, या हो कर्मठ सहयोगी,
निस्वार्थ श्रम, अटूट समर्पण, बन गए प्रेरक योगी।
सबको हृदय से बधाई हो, इस पावन प्रयास पर,
ज्ञान–व्रत की यह यात्रा, लिखे इतिहास नए स्वर।
उज्ज्वल भविष्य की कामना, प्रगति का हो विस्तार,
ज्ञान–सरिता बहती जाए, थमे न इसका धार।
"मिशन शिक्षण संवाद" सदा, रचे नए प्रतिमान,
शिक्षा जगत को दे दिशा, बनकर अमर पहचान।

लुबना वसीम (स०अ०)
(राज्य अध्यापक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक)
पी0एम0श्री स्कूल सिविल लाइन्स
फ़िरोज़ाबाद

मोशन पार्क

शिक्षण संवाद

टीलएम का नाम– मोशन पार्क
लर्निंग आउटकम– बच्चे गति के प्रकार को आसानी से समझ पाएंगे।
टीलएम बनाने की विधि– इस टी एल एम को बनाने में प्रयोग की गई वस्तुओं में वेस्ट कार्डबोर्ड, चार्ट पेपर, टेप, धागा, कैंची आदि।

लाभ– बच्चों को गति के बारे में पहले से पता है एवं इस टी एल एम का प्रयोग करके बच्चों को गति के प्रकार समझाने का प्रयास किया गया है। यह एक वर्किंग टी एल एम है, जिसके द्वारा बच्चे करके सीख सकते हैं। बहुत ही आसानी से बच्चे समझ गए एवं बच्चों द्वारा इसका प्रयोग करके प्रेजेंटेशन भी दिया गया।

पूजा पाण्डेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय निंदूरा
बाराबंकी

विचार शक्तिः

विषम परिस्थितियों में भी शिक्षणः शिक्षक का सच्चा धर्म

शिक्षण संवाद

एक समय था जब शिक्षक बिना सुविधाओं के भी ज्ञान का दीप जलाया करते थे। न तो समय पर किताबें उपलब्ध होती थीं, न ही बच्चों के बैठने के लिए टाट–पट्टी जैसी बुनियादी व्यवस्था सहजता से मिल पाती थी। फिर भी शिक्षक अपने संकल्प, समर्पण और मेहनत से बच्चों को पढ़ा लेते थे। उस दौर में संसाधन कम थे, लेकिन शिक्षण के प्रति श्रद्धा और जिम्मेदारी अपार थी।

आज के समय में विद्यालयों का इंफ्रास्ट्रक्चर पहले की तुलना में कहीं बेहतर हो चुका है। कक्षाएं पक्की हैं, बोर्ड, फर्नीचर, डिजिटल साधन और कई प्रकार की शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसके बावजूद यह सच्चाई हमें स्वीकार करनी होगी कि पढ़ाई का स्तर अपेक्षित रूप से बेहतर नहीं हो पाया है। यह केवल व्यवस्था की कमी का प्रश्न नहीं है, बल्कि हमारे दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं से भी जुड़ा हुआ विषय है।

यह भी एक कड़वा सच है कि आज के शिक्षकों पर नॉन–टीचिंग कार्यों का बोझ काफी बढ़ गया है। सर्वे, रिपोर्ट, चुनाव ड्यूटी, प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ, इन सबके बीच अध्यापन के लिए समय निकालना आसान नहीं रह गया है। फिर भी हमें यह याद रखना

होगा कि अध्यापन केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि एक पवित्र दायित्व है। जब हम शिक्षा को धार्मिक कर्तव्य की तरह अपनाते हैं, तब हर बाधा छोटी लगने लगती है।

एक सच्चा शिक्षक वही है जो तमाम ज़िम्मेदारियों के बावजूद अपने विद्यार्थियों के लिए समय निकालने का प्रयास करता है। बच्चों से संवाद, उनकी कठिनाइयों को समझना, उन्हें प्रोत्साहित करना – यही शिक्षक की असली पहचान है। यदि हम अपने नॉन–टीचिंग कार्यों के साथ–साथ छात्रों को भी पूरा ध्यान दें, तो शिक्षा की गुणवत्ता अपने–आप बेहतर होने लगेगी।

शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे स्वयं को साधारण शिक्षक तक सीमित न रखें। हमें स्पेशल टीचर बनना है। ऐसा शिक्षक जो केवल पाठ्यक्रम पूरा न करे, बल्कि बच्चों के चरित्र, आत्मविश्वास और सोच को भी गढ़े। अनुकूल परिस्थितियों में तो हर कोई पढ़ा सकता है, लेकिन सच्ची परीक्षा विषम परिस्थितियों में होती है। जब संसाधन कम हों, समय सीमित हो और चुनौतियाँ अधिक हों, तब भी जो शिक्षक बच्चों के मन में सीखने की लौ जला दे, वही वास्तव में महान शिक्षक कहलाता है।

आज के शिक्षक यदि अपने भीतर उस पुराने समर्पण को फिर से जाग्रत कर लें, तो शिक्षा व्यवस्था में चमत्कार हो सकता है। याद रखिए, एक अच्छा शिक्षक कई जिंदगियों को दिशा देता है। हमारे शब्द, हमारा व्यवहार और हमारा समर्पण आने वाली

पीढ़ी का भविष्य तय करता है। इसलिए आइए, हम संकल्प लें कि चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हम पूरे मनोयोग से पढ़ाएँगे, प्रेरणा देंगे और एक सशक्त, संस्कारित समाज के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

अफ़ज़ाल अहमद
स०अ०
पी एम श्री स्कूल सिविल लाइन्स, दबरई
ब्लॉक एवं जनपद फिरोजाबाद

iGOT
कर्मयोगी और शिक्षक: कौशल संवर्धन का माध्यम

डिजिटल युग में शिक्षा व्यवस्था भी परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है। बदलती तकनीक, प्रशासनिक अपेक्षाएँ और नई कार्यसंस्कृति के बीच शिक्षकों के लिए स्वयं को निरंतर अपडेट रखना अब आवश्यकता बन चुका है। इसी संदर्भ में भारत सरकार द्वारा iGOT Karmayogi मंच की शुरुआत की गई है, जो Mission Karmayogi के अंतर्गत सरकारी कर्मचारियों की क्षमता और दक्षता बढ़ाने की एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

iGOT कर्मयोगी का मोबाइल ऐप इस डिजिटल प्रशिक्षण व्यवस्था का व्यावहारिक स्वरूप है। यह ऐप एंड्रॉयड और वेब दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है, जिसके माध्यम से शिक्षक और अन्य सरकारी कर्मचारी अपनी भूमिका के अनुरूप विभिन्न ऑनलाइन कोर्स कर सकते हैं। वीडियो लेक्चर, मॉड्यूल, क्विज और कोर्स पूर्ण होने पर प्रमाणपत्र जैसी सुविधाएँ इसे एक सुव्यवस्थित डिजिटल लर्निंग टूल बनाती हैं। Self & paced Learning की सुविधा के कारण उपयोगकर्ता अपनी सुविधा और समय के अनुसार सीख सकता है, जो व्यस्त कार्य–सारिणी वाले शिक्षकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

इस प्लेटफॉर्म का गवर्नेंस भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (DoPT), कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के अधीन है। प्रशासनिक दृष्टि से इसका उद्देश्य

सरकारी सेवाओं में प्रोफेशनलिज़्म, दक्षता और आधुनिक कौशल का विकास करना है। यह पहल समग्र रूप से सकारात्मक है, क्योंकि किसी भी व्यवस्था की मज़बूती उसके मानव संसाधन की क्षमता पर ही निर्भर करती है।

शिक्षकों के संदर्भ में **iGOT** कर्मयोगी की उपयोगिता को भी इसी सकारात्मक दृष्टि से देखा जाना चाहिए। शिक्षक केवल विषयवस्तु का ज्ञाता नहीं होता, बल्कि वह मार्गदर्शक, प्रेरक और नेतृत्वकर्ता भी होता है। डिजिटल साक्षरता, संचार कौशल, समय प्रबंधन, नेतृत्व क्षमता और नैतिक मूल्यों से जुड़े कोर्स शिक्षक के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में सहायक हो सकते हैं। जब शिक्षक अपनी क्षमताओं को बेहतर बनाता है, तो उसका सीधा लाभ कक्षा शिक्षण की गुणवत्ता में दिखाई देता है।

हालाँकि, यहाँ संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। **iGOT** कर्मयोगी मोबाइल ऐप कक्षा शिक्षण का विकल्प नहीं हो सकता। शिक्षा की आत्मा आज भी शिक्षक और विद्यार्थी के बीच प्रत्यक्ष संवाद में ही बसती है। इसलिए ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कक्षा शिक्षण से इतर समय में, केवल अपनी स्किल को एन्हांस करने और स्वयं को अपडेट रखने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए। यदि इन्हें सहायक साधन के रूप में अपनाया जाए, तो ये शिक्षा व्यवस्था को और सशक्त बना सकते हैं।

अंततः यह स्वीकार करना होगा कि तकनीक शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती, बल्कि उसकी क्षमता को विस्तार दे सकती है। शिक्षक आज भी पूरी निष्ठा, धैर्य और प्रतिबद्धता के साथ कक्षा में खड़ा है, क्योंकि उसे मालूम है कि हर ऐप से बड़ा एक बच्चा होता है और हर रिपोर्ट से ज़्यादा अहम उसकी समझ। जब शिक्षक कक्षा में बच्चों के बीच होता है, तो वह केवल पाठ नहीं पढ़ाता, वह भविष्य गढ़ता है और जब वही शिक्षक कक्षा से इतर समय में कर्मयोगी जैसे मंचों से अपनी स्किल को निखारता है, तो उसका लाभ सीधे शिक्षण की गुणवत्ता में दिखाई देता है। यही संतुलन शिक्षा की असली ताकत है—जहाँ शिक्षक सीखते हुए भी पढ़ाता है और पढ़ाते हुए भी सीखता है।

हिमांशु वर्मा
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय लकौड़ा
सूरतगंज—बाराबंकी

शिक्षा

शिक्षण संवाद

भारत में शिक्षा महिलाओं के उत्थान का सबसे शक्तिशाली साधन है, जो उन्हें आत्मनिर्भर, जागरूक और सशक्त बनाती है। यह कहावत सत्य है कि यदि एक महिला शिक्षित होगी तो वह एक घर, परिवार, समाज ही नहीं अपितु एक शिक्षित राष्ट्र का निर्माण करती है। एक शिक्षित महिला अपने बच्चों को, अपने शिष्यों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकती है। महिला शिक्षिका, शिक्षा के लिए प्रेरणा स्रोत है। शिक्षा और समाज के सुधार में सावित्रीबाई फूले एवं ज्योतिबा फूले जैसी महान महिला शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

महिला शिक्षकों के शिक्षण कार्य का लड़कियों की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एक महिला शिक्षक ममतामई आवरण के साथ, आत्मीय संबंध के साथ, मर्म स्पर्शी, मित्रवत व्यवहारिक शिक्षण कार्य करती है। महिला शिक्षक छात्रों को न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व और भविष्य के जीवन को भी प्रभावित करती है। यदि महिलाएं शिक्षक हों, तो अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं, ऐसे में एक महिला शिक्षक लड़कियों की शिक्षा के लिए बेहतरीन सहयोग कर सकती है।

मेरा मानना है कि महिला शिक्षकों के लिए रूढ़िवादी विचारधारा धारा युक्त लोगों के द्वारा थोड़ा, तनावपूर्ण वातावरण तो रहता है, अधिक कार्य, बच्चों की देखभाल घर की जिम्मेदारियां परंतु अधिक समस्या उन्हें, दूर दराज़ इलाकों के विद्यालयों में जाने पर होती है, यात्रा के दौरान सुरक्षा की कमी, चिंता या कोई और घटना के अतिरिक्त महिला शिक्षकों को अधिक संघर्ष या बोझ, किसी भी क्षेत्र में महसूस नहीं होता होगा तभी तो महिला शिक्षिका बच्चों के आकर्षण का केंद्र है। एक महिला शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विशेष कर बाल शिक्षा के लिए महिला शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है ,छोटे बच्चों में महिला शिक्षिका का ममतामयी वातावरण उन्हें सीखने समझने और विद्यालय में रुकने के लिए बेहतरीन सहयोग प्रदान करता है।

एक महिला शिक्षक का पढ़ाने का तरीक़ा, विद्यालय और घर को व्यवस्थित करने का तरीक़ा, आवागमन की स्थितियाँ, तमाम चीज़ों को समेटते, सहेजते हुए कोमलता, सहनशीलता, ममता, भावुकता सभी को व्यवस्थित करके स्वयं को एक शिक्षिका के रूप में ढालना, विद्यालय के बच्चों एवं अभिभावकों के आकर्षण का केंद्र बनना, यही खूबियाँ तो महिला शिक्षकों में हैं, जो उन्हें अपने हुनर में पारंगत दिखाती हैं।

फ़रहत माबूद (प्रधानाध्यापिका)
प्राथमिक विद्यालय तियरा भगवतपुर
कौड़िहार प्रयागराज

पंडित जवाहरलाल नेहरू

पंडित जवाहरलाल नेहरू न केवल स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे, बल्कि वे एक महान दूरद्रष्टा, मानवतावादी और आधुनिक भारत के निर्माता भी थे। उनके लिए शिक्षा केवल साक्षरता या डिग्री प्राप्त करना नहीं था, बल्कि यह एक 'नये मनुष्य' और 'नये समाज' के निर्माण का साधन था।

नेहरू जी के शिक्षा संबंधी विचार उनके 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' (**Scientific Temper**) और 'मानवतावाद' का एक सुंदर संगम थे।

1. शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकासः–

नेहरू जी का मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा को व्यक्ति के भीतर छिपी प्रतिभा को निखारना चाहिए ताकि वह समाज के लिए उपयोगी बन सके।

बौद्धिक विकासः– शिक्षा ऐसी हो जो मस्तिष्क को खोले और उसे स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रेरित करे।

चरित्र निर्माणः– नेहरू जी चाहते थे कि शिक्षा छात्रों में साहस, सत्यनिष्ठा और सेवा की भावना विकसित करे।

सामाजिक उत्तरदायित्वः– नेहरू जी के अनुसार, शिक्षित व्यक्ति वह है जो अपनी व्यक्तिगत उन्नति के साथ–साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझे।

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper):–

नेहरू जी के शैक्षिक दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' था। वे भारत को अंधविश्वासों, रूढ़िवादिता और कट्टरता से मुक्त करना चाहते थे। उन्होंने तर्क दिया कि शिक्षा को छात्रों में जिज्ञासा, तर्कशक्ति और वस्तुनिष्ठता पैदा करनी चाहिए। उनका प्रसिद्ध कथन था कि भारत को 'गोबर युग' से निकलकर 'परमाणु युग' में प्रवेश करना

है, और यह केवल विज्ञान आधारित शिक्षा से ही संभव है। इसी सोच के परिणामस्वरूप उन्होंने **IIT** (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान), **IIM** और **CSIR** जैसे संस्थानों की नींव रखी।

3. मानवतावाद और अंतर्राष्ट्रीयतावादः–

जवाहरलाल नेहरू एक विश्व–नागरिक थे। वे चाहते थे कि भारतीय शिक्षा पद्धति ऐसी हो जो राष्ट्रवाद की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना विकसित करे। उनकी दृष्टि में शिक्षा को शांति, सहिष्णुता और वैश्विक भाईचारे का संदेश देना चाहिए। वे इतिहास और संस्कृति के अध्ययन पर ज़ोर देते थे (जैसा कि उनकी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में दिखता है) ताकि छात्र अपनी जड़ों को पहचानें, लेकिन साथ ही वे अन्य संस्कृतियों का भी सम्मान करें।

4. स्त्री शिक्षा पर विशेष बलः–

नेहरू जी का मानना था कि यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन यदि आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं, तो पूरा परिवार और आने वाली पीढ़ी शिक्षित होती है।

उन्होंने महिला शिक्षा को सामाजिक समानता और आर्थिक स्वतंत्रता की कुंजी माना।

नेहरू जी कन्या शिक्षा के लिए विशेष छात्रवृत्तियों और सुविधाओं के पक्षधर थे।

5. बुनियादी और तकनीकी शिक्षा का समन्वयः–

नेहरू जी, गांधी जी की 'बुनियादी शिक्षा' (**Basic Education**) के प्रशंसक थे, लेकिन वे इसे आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ना चाहते थे।

प्राथमिक शिक्षाः– वे चाहते थे कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाए और कला–कौशल सिखाया जाए।

उच्च शिक्षाः– वे उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और अनुसंधान (**Research**) के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि विश्वविद्यालय केवल ज्ञान के भंडार नहीं, बल्कि 'मानवता, सहिष्णुता और तर्क के मंदिर' होने चाहिए।

6. धर्मनिरपेक्षता और शिक्षाः–

नेहरू जी का मानना था कि शिक्षा को पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष (**Secular**) होना चाहिए। सरकारी संस्थानों में किसी विशेष धर्म की शिक्षा देने के वे विरोधी थे। उनका तर्क था कि शिक्षा को नैतिक मूल्यों पर आधारित होना चाहिए न कि धार्मिक कट्टरता पर।

निष्कर्षः– पंडित नेहरू जी की शिक्षा नीति का सार 'आधुनिकता' और 'मानवता' का मेल था। वे एक ऐसा भारत देखना चाहते थे जहाँ हर बच्चा शिक्षित हो, वैज्ञानिक सोच रखता हो और जिसका हृदय विश्व कल्याण की भावना से भरा हो। आज के डिजिटल युग में भी, उनके द्वारा स्थापित संस्थान भारत की रीढ़ बने हुए हैं।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स.अ.)
कम्पोजिट विद्यालय सुरहन
विकास क्षेत्र – भदोही जनपद – भदोही

बिरसा मुंडा

शिक्षण संवाद

बिरसा मुंडा भारतीय इतिहास के ऐसे महानायक हैं, जिनका जीवन त्याग, संघर्ष और जनजागरण की अमर गाथा है। वे केवल एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि आदिवासी समाज के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सुधारक भी थे। बिरसा मुंडा (15 नवंबर 1875 – 9 जून 1900) एक भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोक नायक थे। उन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान 19वीं शताब्दी के अंत में बंगाल प्रेसीडेंसी (अब झारखंड) में हुए एक आदिवासी धार्मिक सहस्राब्दी आंदोलन का नेतृत्व किया, जिससे वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गए। भारत के आदिवासी उन्हें भगवान मानते हैं और उन्हें धरती आबा नाम से भी जाना जाता है।

बिरसा मुंडा का सबसे प्रसिद्ध नारा था 'अबुआ दिशुम अबुआ राज' जिसका अर्थ है 'हमारा देश, हमारा राज' या 'रानी का शासन समाप्त हो, हमारा शासन स्थापित हो'। यह नारा आदिवासी स्वशासन और ब्रिटिश हुकूमत से आज़ादी की लड़ाई का प्रतीक था, जिसमें उन्होंने अपने लोगों को एकजुट होने और अपने देश पर अपना अधिकार स्थापित करने का आह्वान किया था। उनसे जुड़ा प्रत्येक प्रसंग हमें अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

प्रेरक प्रसंग-

अत्याचार के विरुद्ध जागरण का प्रसंग– उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासी अंग्रेज़ी शासन, जमींदारी प्रथा और मिशनरियों के दोहरे शोषण से पीड़ित थे। उनकी पुश्तैनी भूमि छीन ली गई थी, जंगलों पर उनका अधिकार समाप्त कर दिया गया था और उन्हें बेगार व भारी लगान देने के लिए विवश किया जा रहा था। सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य में रहने वाला आदिवासी समाज धीरे–धीरे अपनी पहचान और अस्तित्व खोता जा रहा था। इसी समय बिरसा मुंडा, जो उस समय अत्यंत युवा थे, ने इस पीड़ा को गहराई से महसूस किया। वे गाँव–गाँव घूमते, लोगों की व्यथा सुनते और उन्हें यह समझाते कि उनका दु:ख किसी की व्यक्तिगत कमज़ोरी नहीं, बल्कि एक संगठित अन्याय का

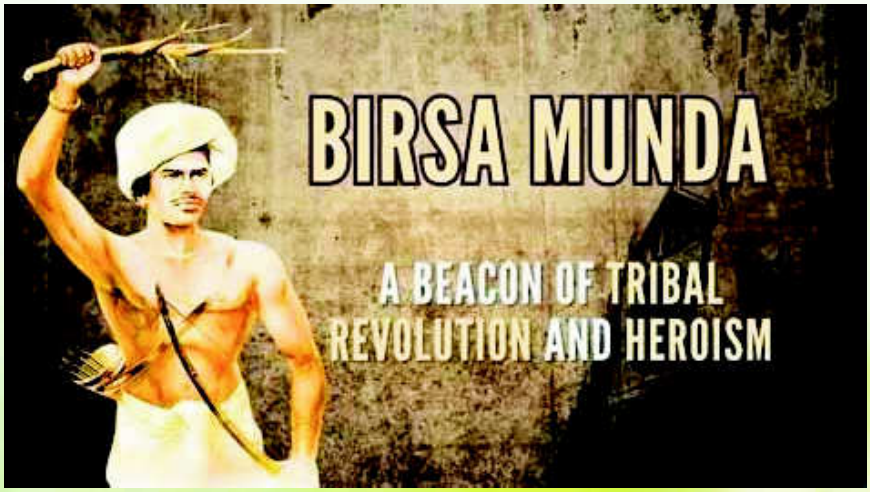

परिणाम है। उन्होंने आदिवासियों को उनकी गौरवशाली परंपराओं की याद दिलाई और कहा कि वे किसी से कम नहीं हैं।

धार्मिक और सामाजिक सुधार का प्रेरक प्रसंग– एक बार बिरसा मुंडा ने देखा कि भय और अज्ञान के कारण आदिवासी अनेक कुरीतियों में जकड़े हुए हैं। वे अंधविश्वासों के कारण स्वयं को कमज़ोर समझने लगे थे। बिरसा ने उन्हें प्रकृति–पूजा, सत्य, पवित्रता और परिश्रम का महत्व समझाया। उन्होंने नशाखोरी, आपसी झगड़ों और सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। एक प्रेरक प्रसंग में, जब किसी गाँव में बीमारी फैलने पर लोग डर से गाँव छोड़ने लगे, तब बिरसा मुंडा ने उन्हें एकत्र कर कहा कि डर से भागना समाधान नहीं है। उन्होंने साफ़–सफ़ाई, अनुशासन और एक–दूसरे की सहायता पर बल दिया। इससे लोगों में आत्मविश्वास लौटा और वे संगठित हुए। इस घटना से बिरसा केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि समाज सुधारक के रूप में भी उभरे।

उलगुलान (महाविद्रोह) का ऐतिहासिक प्रसंग– 1899–1900 का समय बिरसा मुंडा के जीवन का सबसे निर्णायक काल था। अंग्रेज़ों द्वारा लगाए गए वन कानूनों और बढ़ते अत्याचारों के विरुद्ध बिरसा मुंडा ने 'उलगुलान', अर्थात् महाविद्रोह का आह्वान किया। उन्होंने आदिवासियों से कहा कि अब समय आ गया है कि वे अपने अधिकारों के लिए एकजुट हों। एक प्रसंग में, जब अंग्रेज़ी सिपाही गाँव में कर वसूलने पहुँचे, तब हज़ारों आदिवासी बिरसा के नेतृत्व में एकत्र हो गए। उनके हाथों में पारंपरिक हथियार थे, लेकिन उनके हृदय में अन्याय के विरुद्ध प्रचंड साहस था। बिरसा ने उन्हें संयम और अनुशासन बनाए रखने की सीख दी। यह आंदोलन अंग्रेज़ी सत्ता के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया।

गिरफ्तारी और बलिदान का प्रेरक प्रसंग– अंग्रेज़ी शासन ने बिरसा मुंडा को पकड़ने के लिए बड़ा अभियान चलाया। अंततः विश्वासघात के कारण वे पकड़े गए और रांची जेल में बंद कर दिए गए। जेल में भी उनका आत्मबल अडिग रहा। कहा जाता है कि उन्होंने अन्य कैदियों को भी साहस और एकता का संदेश दिया। 9 जून 1900 को मात्र 25 वर्ष की आयु में बिरसा मुंडा का निधन हो गया। उनका यह अल्पायु बलिदान पूरे आदिवासी समाज के लिए अमर प्रेरणा बन गया। उनके संघर्ष का ही परिणाम था कि आगे चलकर आदिवासियों के भूमि अधिकारों को लेकर कानूनों में बदलाव हुए।

बिरसा मुंडा के जीवन से प्राप्त होने वाली उपयोगी सीख–

1. अन्याय कितना ही बड़ा क्यों न हो, संगठित संघर्ष से उसे चुनौती दी जा सकती है।
2. अपनी संस्कृति और पहचान की रक्षा आत्मसम्मान का आधार है।
3. एक जागरूक युवा पूरे समाज में परिवर्तन की लौ जला सकता है।

महानायक बिरसा मुंडा आज भी भारत के युवाओं, विद्यार्थियों और समाज को सत्य, साहस और स्वाभिमान का मार्ग दिखाते हैं।

रविन्द्र कुमार पटेल (स.अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख.– औराई, जनपद – भदोही

धरती आबा बिरसा मुंडा - जंगल से उठी चेतना, जो आज भी जीवित है। : मिहिर यादव

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल बड़े नगरों, महलों और शिक्षित अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहा है। इस इतिहास की एक धड़कन जंगलों में भी धड़की, जहाँ न तो छपे हुए घोषणापत्र थे, न ही संगठित सेनाएँ, परंतु जहाँ स्वाभिमान, आत्मा और धरती के प्रति अटूट निष्ठा थी। इसी धड़कन का नाम है – बिरसा मुंडा।

जंगल में जन्मा विचार

15 नवंबर 1875 को वर्तमान झारखंड के खूँटी ज़िले के उलीहातू गाँव में जन्मे बिरसा मुंडा एक साधारण आदिवासी परिवार से थे। उनके पिता सुगना मुंडा किसान थे। ग़रीबी उनके जीवन का हिस्सा थी, लेकिन आत्मसम्मान उनकी पहचान। बिरसा का बचपन अन्याय के साये में बीता जहाँ अंग्रेज़ी शासन, ज़मींदारी प्रथा और मिशनरी हस्तक्षेप ने आदिवासी समाज को उसकी ही भूमि पर पराया बना दिया था। उन्होंने बहुत कम उम्र में समझ लिया कि समस्या केवल आर्थिक नहीं है, बल्कि संस्कृति, पहचान और अधिकार की है।

शिक्षा से चेतना तक

बिरसा ने मिशन स्कूल में शिक्षा पाई, पर शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि यह शिक्षा आदिवासी समाज को सशक्त करने के बजाय उसकी जड़ों से काटने का माध्यम बन रही है। यहीं से बिरसा ने एक अलग मार्ग चुना– उन्होंने न तो किसी धर्म को अपनाया और न छोड़ा, बल्कि आदिवासी समाज को उसकी मूल आत्मा से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने सामाजिक सुधार का आह्वान किया। नशा त्याग, भय त्याग और आत्मगौरव की पुनर्स्थापना की। यही आंदोलन आगे चलकर "बिरसाइत आंदोलन" कहलाया।

उलगुलान : जब अन्याय के विरुद्ध जंगल खड़ा हुआ

1895 से 1900 के बीच बिरसा मुंडा के नेतृत्व में जो हुआ, वह केवल विद्रोह नहीं था। वह उलगुलान (महाविस्फोट) था। उनका नारा था – "अबुआ दिशुम, अबुआ राज" (हमारा देश, हमारा राज) यह नारा केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की माँग नहीं था, बल्कि यह घोषणा थी कि आदिवासी समाज अब अपनी जमीन, जंगल और जीवन पर स्वयं निर्णय करेगा। बिरसा ने हथियारों से अधिक चेतना को हथियार बनाया, और यही बात ब्रिटिश सत्ता के लिए सबसे खतरनाक सिद्ध हुई।

अल्पायु में बलिदान, दीर्घकालीन प्रभाव

9 जून 1900 को मात्र 25 वर्ष की आयु में रांची जेल में बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई। यद्यपि शरीर कैद में समाप्त हो गया, लेकिन उनके विचारों ने इतिहास की दिशा बदल दी। उनके आंदोलन के परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार को आदिवासी भूमि कानूनों पर विचार

करना पड़ा। छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (1908) और बाद में बने अन्य आदिवासी संरक्षण कानून, बिरसा मुंडा की चेतना की ही कानूनी अभिव्यक्ति हैं।

स्वतंत्र भारत में भी PSA अधिनियम (1996), वन अधिकार अधिनियम (2006) – जैसे कानून उसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हैं कि जल, जंगल और ज़मीन पर पहला अधिकार स्थानीय समुदाय का है।

स्मृति नहीं, जीवित उपस्थिति

आज उलीहातू गाँव आदिवासी समाज के लिए एक देवस्थली है। डोम्बारी बुरु शहादत की गवाही देता है। रांची में बिरसा मुंडा से जुड़े स्मारक, संग्रहालय और संस्थान केवल भवन नहीं, बल्कि चेतना के केंद्र हैं। भारत सरकार द्वारा 15 नवंबर को "जनजातीय गौरव दिवस" घोषित किया जाना, इस बात का प्रमाण है कि बिरसा मुंडा अब केवल इतिहास नहीं, राष्ट्रीय स्मृति बन चुके हैं।

आज के भारत के लिए बिरसा मुंडा का संदेश

बिरसा मुंडा हमें यह सिखाते हैं कि क्रांति का अर्थ हिंसा नहीं, बल्कि स्वाभिमान की जागृति है। वे बताते हैं कि संघर्ष उम्र नहीं देखता, और नेतृत्व डिग्री से नहीं, दृष्टि से पैदा होता है। आज जब विकास और विस्थापन की बहस साथ–साथ चल रही है, बिरसा मुंडा का विचार हमें चेतावनी देता है कि विकास वही सार्थक है, जो मानव और प्रकृति दोनों को साथ लेकर चले।

निष्कर्ष

बिरसा मुंडा मर नहीं सकते, क्योंकि वे व्यक्ति नहीं, विचार हैं। जब तक जंगल हैं, जब तक धरती है, और जब तक अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस है। धरती आबा जीवित रहेंगे।

मिहिर यादव (स0अ0)
कंपोजिट विद्यालय कुकुहाँ,
विकास खण्ड– करंजाकलाँ,
जनपद– जौनपुर।

हे मतदाता

हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

नेताओं की होड़ लगी है, चूक ना खाना देख इन्हें।
बचकानी हालत करते ये, मूक ना जाना देख इन्हें।
मत ही हमें मार्ग दिखाता, कुछ ऐसा अभियान करो।
हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

अपने मत को देकर देखो, लोकतंत्र मज़बूत मिले।
एक एक मत शक्ति देता, सदा हक़ बलबूत मिले।।
गौरवशाली का क्षण है ये, इसे नहीं बलिदान करो।।
हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

अपने मत के हे अधिकारी, ये संकल्प तुम्हारा है।
मत केन्द्र में जाकर करिए, हमको यही उबारा है।।
संविधान का यज्ञ यही है, आगे बढ़ जयगान करो
हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

अच्छा नेता चुनकर लाओ, जिससे पूरी आशा हो।
ये लोकतंत्र के कर्तव्यों पे, लिखी गई परिभाषा हो।
हो विकास की गंगा ऐसी, उसका ही यशगान करो
हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

वोट बैंक है जुमले बाजी, पड़ो नहीं इस चक्कर में।
एक एक मत बेशक़ीमती, यह नेताओं के टक्कर में।
लोकतंत्र की शक्ति ख़ातिर, क़तई नहीं विषपान करो।
हे मतदाता भाग्य विधाता, जाकर के मतदान करो।
संविधान के प्रथम प्रदाता, जाकर के मतदान करो।

नवीन कुमार भट्ट नीर
एकता शिशु निकेतन बरबसपुर
ब्लॉक–मानपुर, जिला – उमरिया,
मध्यप्रदेश

निपुण लक्ष्य एवं व्याकरण

निपुण लक्ष्य

निपुण लक्ष्य को पाने का, हम सबने मन में ठाना है।
कमज़ोर हो या पिछड़ा बच्चा, चलना ना कोई बहाना है।
आधारशिला, ध्यानाकर्षण, शिक्षक संग्रह का प्रयोग करें।
शिक्षा में नए नवाचारों का नित नित हम समावेश करें।
बिग बुक से पठन कौशल का, विकास हमें कराना है।
निपुण लक्ष्य को पाने का, हम सबने मन में ठाना है।
निपुण लक्ष्य और सूची को, प्रतिदिन हम अपडेट करें।
पिछड़ रहे जो बच्चे उनमें, हम नया जोश भरें।
उपचारात्मक शिक्षण का, बिगुल भी हमको बजाना है।
निपुण लक्ष्य को पाने का, हम सबने मन में ठाना है।
दिसंबर दो हजार तेईस की, सीमा का हम सब ध्यान करें।
निपुण बने विद्यालय अपना, मिल कर सब ऐसा जतन करें।
प्रदेश में सुल्तानपुर का, हम सबको मान बढ़ाना है।
निपुण लक्ष्य को पाने का, हम सबने मन में ठाना है।

व्याकरण

व्यक्ति, वस्तु, स्थान का
नाम है संज्ञा कहलाता
राम, रहीम, कुर्सी, कानपुर
उदाहरण हमको बतलाता
संज्ञा का स्थान जो पावे
सर्वनाम वो कहलाता
मेरा, तुम, तुम्हारा, उसका
सर्वनाम का बोध कराता
काम का करना या होना
क्रिया है हमको बतलाती
चलना, खाना, पीना, पढ़ना
क्रिया है हमको सिखलाती
संज्ञा के गुण दोष बताए
विशेषण नाम से कहलाए
काला, मोटा और सुनहरा
विशेषण है होता गहरा

श्रीमती अनुपमा तिवारी
प्रा०वि० निदूरा
विकास खण्ड–कूरेभार, जनपद–सुलतानपुर

बाल दिवस

शिक्षण संवाद

भारत में बाल दिवस प्रत्येक वर्ष 14 नवम्बर को अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह दिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के रूप में मनाया जाता है। पंडित नेहरू बच्चों से अत्यधिक प्रेम करते थे और उनका विश्वास था कि बच्चों की सही परवरिश, शिक्षा और मार्गदर्शन से ही देश का भविष्य उज्ज्वल बनाया जा सकता है। बच्चों के प्रति उनके स्नेह के कारण ही उन्हें "चाचा नेहरू" कहा जाता था।

बाल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अधिकारों की रक्षा, उनके सर्वांगीण विकास तथा समाज में उनके महत्व को रेखांकित करना है। बच्चे किसी भी देश की सबसे बड़ी पूँजी होते हैं। वे ही आगे चलकर वैज्ञानिक, शिक्षक, चिकित्सक, सैनिक, कलाकार और राष्ट्रनिर्माता बनते हैं। यदि बचपन सुरक्षित, शिक्षित और संस्कारित होगा तो राष्ट्र स्वतः प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

इस अवसर पर विद्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्रों और शैक्षणिक संस्थानों में अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जैसे–सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, खेलकूद प्रतियोगिताएँ, निबंध लेखन, वाद–विवाद, चित्रकला और प्रश्नोत्तरी आदि। कई स्थानों पर शिक्षक स्वयं

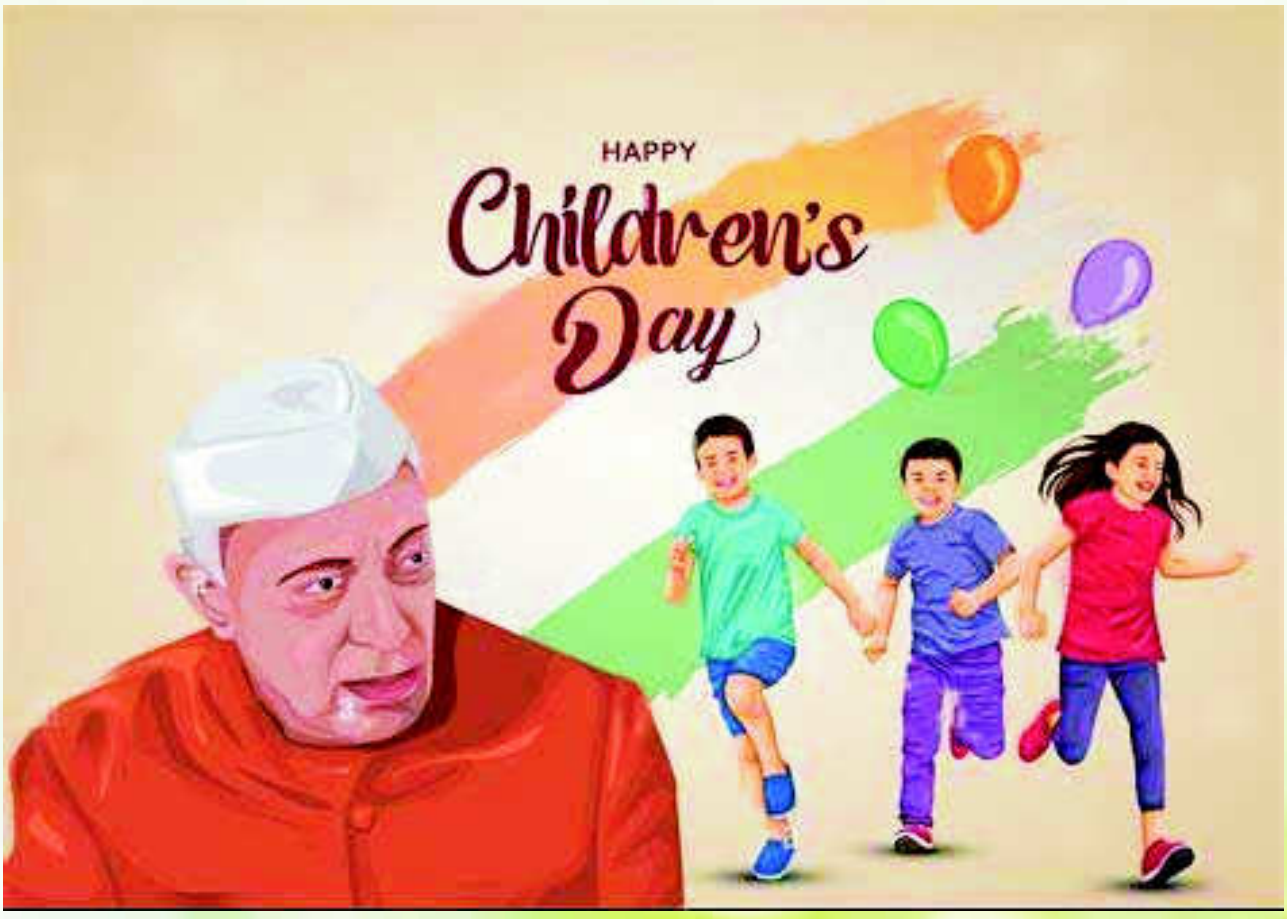

बच्चों के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं, जिससे बच्चों को आनंद और आत्मीयता का अनुभव होता है। यह दिन बच्चों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता और प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है।

बाल दिवस हमें यह सोचने पर भी विवश करता है कि क्या हमारे समाज के सभी बच्चों को समान अवसर मिल पा रहे हैं। आज भी अनेक बच्चे गरीबी, बाल श्रम, बाल विवाह, कुपोषण और शिक्षा के अभाव से जूझ रहे हैं। ये समस्याएँ न केवल बच्चों के भविष्य को अंधकारमय बनाती हैं, बल्कि देश की प्रगति में भी बाधक हैं। इसलिए सरकार, समाज और प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह बच्चों को सुरक्षित वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराए।

भारतीय संविधान ने बच्चों को शिक्षा का अधिकार, संरक्षण का अधिकार और समान अवसर का अधिकार प्रदान किया है। नई शिक्षा नीति 2020 भी बच्चों के सर्वांगीण विकास, खेल आधारित एवं आनंददायक शिक्षा पर विशेष बल देती है। बाल दिवस इन सभी प्रयासों को सशक्त बनाने का प्रेरक दिवस है।

अंततः बाल दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक चेतना और नैतिक दायित्व का प्रतीक है। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम प्रत्येक बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास करेंगे, उन्हें भयमुक्त वातावरण देंगे और उनके सपनों को साकार करने में सहयोग करेंगे। स्वस्थ, शिक्षित और संस्कारित बच्चे ही एक सशक्त, समृद्ध और विकसित भारत की नींव हैं।

बबलू सोनी
प्राथमिक विद्यालय उतरार
बाबागंज–प्रतापगढ़।

भूगोल वाटिका

शिक्षण संवाद

कम्पोजिट विद्यालय रैपुरवा माफ़ी क्षेत्र व जनपद चित्रकूट में प्र०अ० राज कुमार शर्मा द्वारा भूगोल शिक्षण को आनन्ददायी बनाने के लिए स्थायी भूगोल वाटिका का निर्माण किया गया है। जिसमें पर्वत, पठार, नदी, डेल्टा, मुहाना, विश्व के प्रमुख घास के मैदान, विसर्प, इग्लू, पठार, मुहाना, थार का मरुस्थल, क्षत्रक शिला, रिफ्ट घाटी, यू आकार की घाटी, पृथ्वी की आंतरिक संरचना, मैदान, झील आदि प्राकृतिक संरचनाओं को कूड़े कबाड़ एवं बालू सीमेंट का प्रयोग करके मूर्त रूप दिया गया है। वह वाटिका बच्चों के मन में जहां कौतूहल पैदा करती हैं, वहीं सीखने के नये द्वार भी खोलती है। शिक्षा के क्षेत्र में यह नवाचार बच्चों के सीखने के स्तर को बढायेगा और नामांकन व उपस्थिति में भी प्रेरणादायक बनेगा। इस भूगोल वाटिका को देखने के लिए जनपद के कई प्रशासनिक अधिकारी आ चुके हैं। साथ ही अभिभावकों द्वारा भी विद्यालय के इस नव प्रयोग को सराहा जा रहा है।

इस भूगोल वाटिका के निर्माण में श्री भोला सिंह, रोशन सिंह, वीरेंद्र कुमार, राकेश सिंह, श्रीमती ममता चंदेल, श्रीमती आराधना दुबे का सहयोग सराहनीय रहा।

राज कुमार शर्मा
(प्र०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय रैपुरवा माफी
शिक्षाक्षेत्र व जनपद चित्रकूट

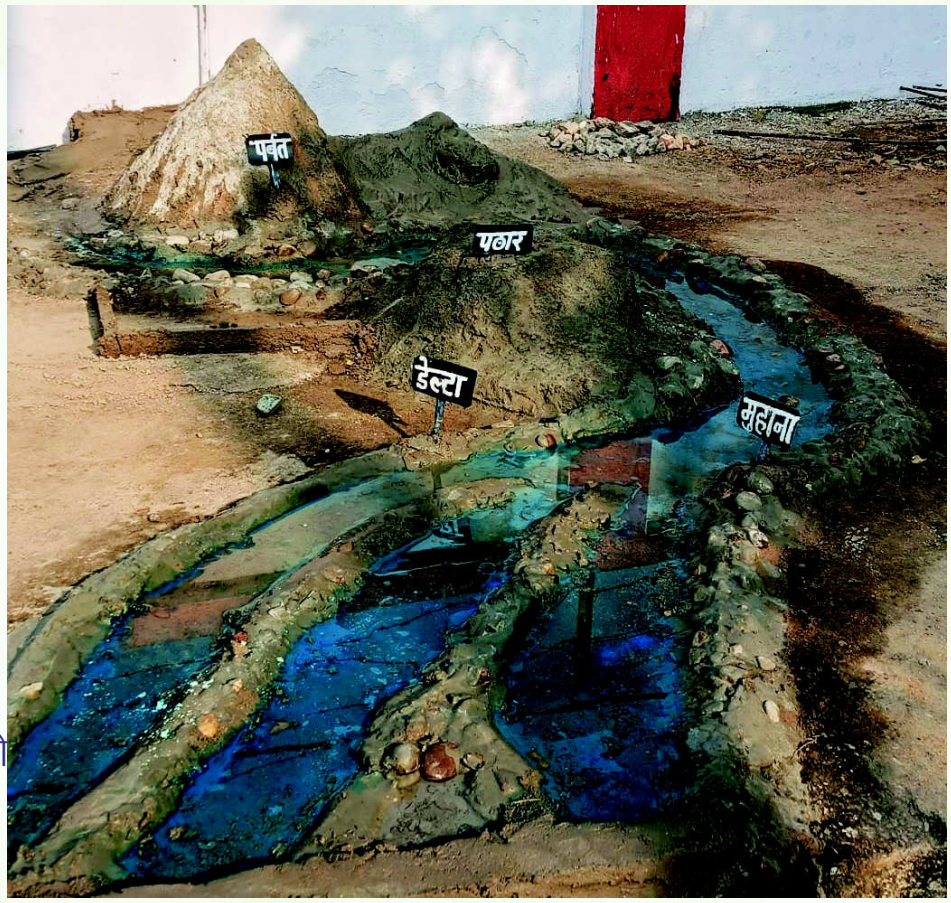

पॉडकास्ट

शिक्षण संवाद

पॉडकास्ट एक ऑडियो आधारित डिजिटल माध्यम है, जिसके द्वारा विषयवस्तु को सुनने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षण में पॉडकास्ट का उपयोग आज एक प्रभावी ICT आधारित नवाचार माना जाता है।

पॉडकास्ट क्या है?

पॉडकास्ट पूर्व–रिकॉर्डेड ऑडियो कार्यक्रम होता है, जिसे मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर कभी भी और कहीं भी सुना जा सकता है।

शिक्षण में पॉडकास्ट के प्रमुख उपयोग

- पूरक शिक्षण (Supplementary Learning)
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त विषयों की व्याख्या।
- पुनरावृत्ति (त्मअपेपवद) के लिए उपयोगी।
- दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा।
- ऑनलाइन कक्षाओं में ऑडियो लेक्चर।
- इंटरनेट कम होने पर भी प्रभावी माध्यम।
- भाषा शिक्षण में सहायक।

- उच्चारण, श्रवण कौशल (Listening Skill) का विकास।
- कहानी, संवाद, कविता सुनाकर भाषा समझाना।
- स्व–अधिगम (Self Learning)
- विद्यार्थी अपनी गति से सीख सकते हैं।
- बार–बार सुनने की सुविधा।

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए–
- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए उपयोगी।
- पढ़ने में कठिनाई वाले बच्चों को सहायता।

मूल्य आधारित एवं प्रेरणात्मक शिक्षा–
- नैतिक कहानियाँ, जीवन अनुभव, प्रेरक भाषण।

पॉडकास्ट के लाभ

शिक्षण को रोचक एवं सरल बनाता है।
समय व स्थान की बाधा नहीं
कम लागत वाला माध्यम
ध्यान व एकाग्रता में वृद्धि
शिक्षक–विद्यार्थी संवाद को सशक्त बनाता है।

सीमाएँ

दृश्य सामग्री का अभाव।
सभी विद्यार्थी श्रवण आधारित सीखने में समान नहीं।
तकनीकी उपकरणों की आवश्यकता।

शिक्षक कैसे उपयोग कर सकते हैं?

अध्याय का ऑडियो सार बनाकर साझा करें।
गृहकार्य के रूप में पॉडकास्ट सुनना।
स्वयं का शैक्षिक पॉडकास्ट रिकॉर्ड करना।
DIKSHA, Spotify, Google Podcasts का उपयोग।

निष्कर्ष

पॉडकास्ट शिक्षण को लचीला, समावेशी और आधुनिक बनाता है। यदि इसका योजनाबद्ध और उद्देश्यपूर्ण उपयोग किया जाए, तो यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अत्यंत प्रभावी बना सकता है।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर– 1
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

'शब्द खोजो पहेलियां'

शिक्षण संवाद

पिछले कई वर्षों से मैं अपने बच्चों को पहेलियों के माध्यम से दो अक्षर, तीन अक्षर चार अक्षर और मात्राओं वाले शब्दों का अभ्यास कराती आ रही हूं।

इन पहेलियों को मैंने 'शब्द खोजो पहेली' का नाम दिया है। इन पहेलियों के माध्यम से बच्चे अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, मंत्र ज्ञान तो करते ही हैं। उनकी शब्दावली में भी वृद्धि होती है।

कक्षा 1 के बच्चे जब आरंभ में स्कूल आते हैं तब उन्हें अक्षर ज्ञान कराया जाता है। यह शब्द खोजो पहेलियाँ सर्वप्रथम तो अक्षर पहचान में काफी मददगार सिद्ध होती हैं, क्योंकि शब्द बनाने के लिए पहले बच्चे अक्षरों को निरंतर अभ्यास से पहचानते हैं। इसके बाद इन पहेलियों के माध्यम से बच्चे दो अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाते हैं।

दो अक्षरों के बाद तीन अक्षर, चार अक्षर और इसके पश्चात मात्राओं वाले शब्दों की शब्द खोजो पहेलियों के द्वारा खोज करते हैं इसके लिए हम बच्चों को चित्रों का भी सहारा देते हैं। इसके बाद जब बच्चे प्रवीण हो जाते हैं, तब बिना चित्रों के माध्यम से उन्हें

पहेलियों में शब्द खोजने को कहते हैं इससे उनकी अक्षर ज्ञान, मात्रा ज्ञान और शब्द ज्ञान, इन सब में वृद्धि होती है।

इसके लिए मैंने दो अक्षरों, तीन अक्षरों, चार अक्षरों, फलों, सब्जियों, जानवरों, क्रिया शब्दों इत्यादि की शब्द खोजो पहेलियों का निर्माण किया है। इसके लिए मैंने शब्द पहेलियों के छोटे–छोटे लैमिनेटेड कार्ड भी बनाए हैं, जो बच्चे स्वयं हाथ में लेकर पहेलियों में शब्दों को खोजते हैं।

पूजा सचान (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय बसारी
गुरसरांय झांसी

मधुर वचन

काली कोयल बाग़ों में, मीठे–मीठे गीत गाती हैं।
मधुर वचन है औषधि, हम सबको बतलाती हैं।।

मधुर वचन हृदय में, अपनी जगह बनाते हैं।
कड़वे बोल सभी के लिए, ज़हर समान हो जाते हैं।।

अपने जीवन में जो सदा, मधुर वचन अपनाते हैं।
बन जाते वो सबके प्रिय, जीवन में सफलता पाते हैं।।

मधुर वचन रिश्तों को, और मज़बूत बनाते हैं।
जीवन में मिलजुल कर रहना, हम सबको सिखाते हैं।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा वि अमरौधा प्रथम
ब्लॉक– अमरौधा, जनपद– कानपुर देहात

बाल कहानी

बड़ों का कहना मानना चाहिये

शिक्षण संवाद

फ़लक एक चंचल और होनहार लड़की थी। फ़लक के घर के पास ही आम की बगिया थी। फ़लक को आम बहुत पसंद था। वह पेड़ पर चढ़ कर आम तोड़ कर खाती थी। फ़लक के अभिभावक रोज़ उसे समझाते हैं कि बेटा पेड़ पर मत चढ़ा करो, चोट लग जाएगी। पर फ़लक एक कान से सुनती और दूसरे कान से निकाल देती। एक दिन की बात है कि फ़लक सुबह–सुबह उठकर बग़िया में गई और आम के पेड़ पर चढ़ गई। फ़लक अभी नींद में थी। पूरी तरह से उसकी आँख नींद से भरी थी। तभी उसका पैर पेड़ की डाल से फिसला और वह धड़ाम से नीचे गिर गई। नीचे गिरते ही वह चिल्लाई। फ़लक की चीख़ने की आवाज़ सुनकर सभी लोग इकट्ठा हो गए।

फ़लक के अभिभावक जब आए तो फ़लक बेहोश थी। सभी लोग मिलकर डॉक्टर के यहाँ ले गए। डॉक्टर ने बताया पैर में सूजन आ गई जो कुछ दिनों में ठीक हो जाएगा। कुछ दिनों तक फ़लक का इलाज चला। फिर वो ठीक हो गई। फ़लक को एहसास हुआ कि उसके घर वाले उसकी वजह से परेशान हुए और खुद उसे भी बहुत तकलीफ़ हुई। उसने अपने अभिभावकों से अपनी गलती के लिए माफी माँगी और भविष्य में ऐसा न करने के लिए खुद से और अपनों से वादा किया। सभी ने उसको माफ़ कर दिया।

शिक्षा- हमें अपने अभिभावक की बात हमेशा माननी चाहिए।

शमा परवीन, अनुदेशक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकोरा मोड़,
जनपद– बहराइच।

चेकर्स खेल

शिक्षण संवाद

चेकर्स एक लोकप्रिय और बौद्धिक बोर्ड खेल है, जिसे दो खिलाड़ी आपस में खेलते हैं। यह खेल बच्चों और बड़ों दोनों में समान रूप से पसंद किया जाता है। चेकर्स खेल मनोरंजन के साथ–साथ मानसिक विकास में भी सहायक होता है।

चेकर्स एक रणनीति आधारित खेल है, जिसे 8x8 खाने वाले शतरंज जैसे बोर्ड पर खेला जाता है। इसमें प्रत्येक खिलाड़ी के पास समान संख्या में गोटियाँ (डिस्क) होती हैं। खिलाड़ी बारी–बारी से अपनी गोटियाँ चलाते हैं और विरोधी की गोटियों को काटने का प्रयास करते हैं।

यह खेल दो खिलाड़ियों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी के पास 12–12 गोटियाँ होती हैं। गोटियाँ बोर्ड के काले खाने पर रखी जाती हैं। गोटी केवल तिरछी दिशा में आगे की ओर चल सकती है। यदि विरोधी की गोटी के पीछे खाली स्थान हो, तो उसे कूदकर काटा जा सकता है। जब कोई गोटी विरोधी के अंतिम खाने तक पहुँच जाती है, तो वह किंग (राजा) बन जाती है। किंग गोटी आगे और पीछे दोनों दिशाओं में चल सकती है। जो खिलाड़ी विरोधी की सभी गोटियाँ काट लेता है या उसे चलने में असमर्थ कर देता है, वही विजेता होता है।

चेकर्स खेल के लाभः–

1. मानसिक विकास– सोचने, योजना बनाने और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।
2. एकाग्रता में वृद्धि– ध्यान और धैर्य विकसित होता है।
3. खेल भावना का विकास– हार–जीत को स्वीकार करना सीखते हैं।
4. बच्चों के लिए उपयोगी– सरल नियमों के कारण बच्चे आसानी से सीख सकते हैं।
5. मनोरंजन का अच्छा साधन– खाली समय का सदुपयोग होता है।

चेकर्स खेल की विशेषताएँः–

1. यह एक रणनीतिक खेल है।
2. खेलने के नियम सरल और स्पष्ट हैं।
3. यह खेल घर, विद्यालय और प्रतियोगिताओं में खेला जा सकता है।
4. कम संसाधनों में खेला जाने वाला खेल है।
5. यह खेल शारीरिक नहीं बल्कि बौद्धिक क्षमता पर आधारित है।

उपसंहार

चेकर्स खेल मनोरंजन के साथ–साथ बच्चों में तार्किक सोच, धैर्य और आत्मविश्वास विकसित करता है। यह एक उपयोगी और शिक्षाप्रद खेल है, जिसे विद्यालयों में अवश्य प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

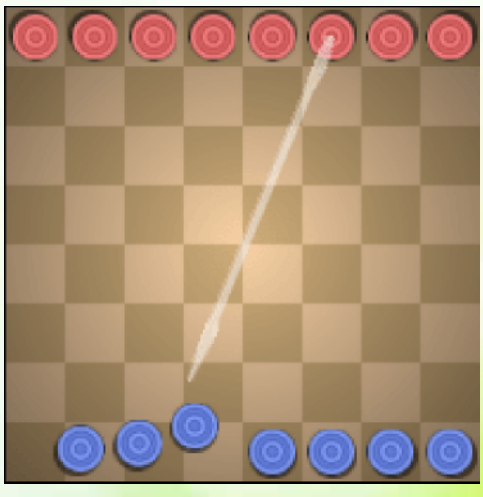

अभय कुमार
सहायक अध्यापक
कम्पोजिट विद्यालय सराय खान देव
बबागंज–प्रतापगढ़।

हनुमान आसन

शिक्षण संवाद

नमस्ते आदरणीय शिक्षक एवं प्यारे बच्चो!

आज मैं योगासन में हनुमान आसान के बारे में बताने जा रही हूँ। यह आसान भगवान हनुमान जी की शक्ति और साहस से प्रेरित है। इस आसान से हमारा शरीर लचीला और मज़बूत बनता है। यह हमें ध्यान करना और संतुलन बनाना सिखाता हैं। आइए, इसे करने की विधि, लाभ, और सावधानियों के बारे में जानें।

योगासन करने की विधि -

1. योग मैट पर वज्रासन/घुटनों के बल बैठें।
2. दाँया पैर आगे और बायां पैर पीछे की ओर धीरे–धीरे बढ़ाएं।
3. दोनों पैरों को आगे पीछे फैलाते हुए शरीर को नीचे ले जाएं।
4. हाथ जमीन पर या नमस्कार मुद्रा में रखें।
5. 10 –20 सेकंड तक रुकें, सामान्य श्वास लें।
6. धीरे–धीरे वापस आएं और पैरों को बदलकर दोहराएं।

लाभः-

1. जांघ, कूल्हे और पैरों का लचीलापन बढ़ता है।
2. रीढ़ की हड्डी को मज़बूत करता है।
3. एकाग्रता और आत्मविश्वास बढ़ता है।

सावधानियांः-

1. घुटने, कमर या जांघ में दर्द हो तो ना करें।
2. शुरुआत में योग शिक्षक की देखरेख में करें।
3. ज़बरदस्ती नीचे ना जाएं, सहारे का उपयोग करें।

आइए! हम सब रोज़ योग करें और स्वस्थ रहें।

गुप्ता राजेश्वरी
प्राथमिक विद्यालय जयसिंहगढ़
बाबा बेलखरनाथधाम– प्रतापगढ़

कोई मिल गया

शिक्षण संवाद

फिल्म का नामः— कोई मिल गया
निर्देशकः— राकेश रोशन
मुख्य कलाकारः— ऋतिक रोशन, प्रीति जिंटा, रेखा
शैलीः— विज्ञान—कथा, बाल फिल्म, पारिवारिक
रिलीज़ वर्षः— 2003

कहानी का सार

कोई मिल गया एक मासूम और भावनात्मक कहानी है, जो रोहित नामक एक ऐसे बालक के इर्द—गिर्द घूमती है, जिसकी मानसिक उम्र कम होती है। उसके पिता एक वैज्ञानिक थे, जिनकी मृत्यु के बाद रोहित अपनी माँ के साथ रहता है। एक संयोग से रोहित का संपर्क अंतरिक्ष से आए, एक मित्र जादू से होता है। जादू की शक्तियों से रोहित के जीवन में आत्मविश्वास, साहस और नई ऊर्जा आती है। कहानी दोस्ती, स्वीकार्यता और करुणा का संदेश देती है।

बाल दर्शकों के लिए उपयुक्तता:-

यह फ़िल्म बच्चों के लिए बेहद प्रेरक है।
दोस्ती और सहयोग का महत्व सिखाती है।
कमज़ोर समझे जाने वाले व्यक्ति के आत्मसम्मान को उभारती है।
कल्पना और विज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाती है।

अभिनय और निर्देशन:-

ऋतिक रोशन का अभिनय अत्यंत प्रभावशाली है, उन्होंने रोहित के चरित्र को पूरी संवेदनशीलता से निभाया है। जादू का किरदार बच्चों को विशेष रूप से आकर्षित करता है। राकेश रोशन का निर्देशन भावनात्मक संतुलन और मनोरंजन दोनों को साथ लेकर चलता है।

संगीत और तकनीकी पक्ष:-

फ़िल्म का संगीत मधुर और यादगार है, खासकर "इधर चला मैं उधर चला" जैसे गीत बच्चों को खूब भाते हैं। उस समय के अनुसार विशेष प्रभाव सराहनीय हैं, जो कहानी को विश्वसनीय बनाते हैं।

संदेश:–

फ़िल्म यह सिखाती है कि हर व्यक्ति में कोई न कोई विशेषता होती है। सच्ची मित्रता, प्रेम और विश्वास से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष:–

'कोई मिल गया' एक उत्कृष्ट बाल फिल्म है, जो मनोरंजन के साथ–साथ मानवीय मूल्यों को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है। यह बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों–सभी के लिए देखने योग्य है।

मिथलेश कुमार
सहायक शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय पूरे दीवन
बाबागंज–प्रतापगढ़।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर–**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
टीम मिशन शिक्षण संवाद